साहित्यिक स्रोत में →

अथर्ववेद → इस ग्रन्थ में 20 मण्डल 731 ऋचाएं तथा 5839 मंत्र है इससे उत्तरवैदिक कालीन भारत की पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है इसमें अधिकांश मंत्र आयुर्वेद से संबंधित है जिसमें अनेक रोगों से बचने के लिए औषधियों, साँप के विष को दूर करने तथा भाई होने से संबंधित मंत्रों का उल्लेख है।

* **उपवेद** → वेद का एक उपवेद भी है जिसमें चिकित्सा सम्बन्धी विशेष तथ्यों का उल्लेख मिलता है यह ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है धनुर्वेद यजुर्वेद का उपवेद है जिसमें शस्त्र प्रयोग का उल्लेख मिलता है गन्धर्ववेद सामवेद का उपवेद है - जिसमें संगीत, गायन, नृत्य आदि विधा का उल्लेख मिलता है। शिल्पवेद अथर्ववेद का उपवेद है इसमें वास्तुकला के भवन-निर्माण कलाओं का वर्णन मिलता है।

* **वेदांग** वैदिक काल के अन्त में वेदों का अर्थ समझने के लिए वेदांग की रचना हुई ये वेदों के अंग है जिनकी संख्या-06 है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। वैदिक मंत्रों का शुद्ध उच्चारण करने के लिए शिक्षाशास्त्र का निर्माण किया गया। विधि और नियमों का प्रतिपादन करने के लिए कल्पसूत्र का निर्माण हुआ। कल्पसूत्र के तीन भाग है - श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र। पाणिनिकृत अष्टाध्यायी व्याकरण ग्रंथों में सबसे महत्वपूर्ण है इसी प्रकार यास्क द्वारा निरुक्त में वैदिक शब्दों की उत्पत्ति को बतलाई गई है छन्दशास्त्र में छन्द से सम्बन्धित बातों का उल्लेख है ज्योतिषशास्त्र में

ज्योतिष से सम्बन्धित बातें पाई जाती है

③ ④

~~इन पुराणों से हमें~~

इन पुराणों के विषय 5 हैं (सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश मनवन्तर और वंशानुचरित)। इन पुराणों से हमें मौर्य वंश शिशुनागवंश, तथा अन्य महत्वपूर्ण राजवंशों की जानकारी मिलती है वास्तव मे इतिहास जानने के लिए यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ~~डॉ० स्मिथ के अनुसार "यदि पुराणों को ध्यान से पढ़ा~~ ~~जाता है~~ गंधर्व, शक, यवन, तुषार हूण इत्यादि बर्बर जातियों का विवरण मिलता है। इतना ही नहीं भारत के प्राचीन ऐतिहासिक कथाओं ~~तथा~~ घटनाओं का सर्वश्रेष्ठ एवं क्रमबद्ध विवरण मिलता है। डॉ० स्मिथ के अनुसार - "यदि पुराणों को ध्यान से पढ़ा जाय तो बहुत ही अच्छा, उपयोगी तथा मूल्यवान ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त हो सकता है।"

Scanned with CamScanner